॥ श्रीराम ॥

आध्यात्मिक सेमिनार

डॉ. श्री विश्वामित्र जी महाराज

21.01.2010

(सायं 4.00 बजे से 5.00 बजे)

(ग्वालियर में पूज्यश्री महाराज जी द्वारा डॉक्टर्स को दिया गया प्रवचन)

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः (7)

देवियो और सज्जनो! परमात्मा को प्रणाम किया है, अब आप सबको प्रणाम करता हूँ। मेरा कोटि–कोटि प्रणाम स्वीकार कीजियेगा। आपका एक वृद्ध, कुलीग (colleague) आपके सामने बैठा हुआ है। आप मेरे अपने हो, इसी अधिकार से आज आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। अपने को प्यार करने का भी अधिकार है, तो झिड़की देने का भी अधिकार होता है। डाँटने का अधिकार भी होता है, क्योंकि वह अपना है। आप मुझे ऐसा ही समझियेगा। इसी औकात से मैं आज आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। जब भी कोई मुझे अपने colleagues मिलते हैं अभी भी, तो मेरा गप–शप मारने को मन करता है। साधकों के साथ तो मैं ऐसा कर नहीं सकता। पर कोई पुराने colleagues मुझे मिल जाते हैं, स्टूडेंट्स मिल जाते हैं तो मैं दिल खोलकर उनके साथ बातचीत कर लेता हूँ। आज भी ऐसे ही आपकी सेवा में उपस्थित हूँ।

सर्वप्रथम, जितना आपने मेरे बारे में सुना है या पढ़ा है, थोड़ी सी clarification की आवश्यकता है। मैं फिजीशियन नहीं हूँ। I am not even a medical man. मैंने Veterinary Science में ग्रेजुएशन की। कैसे मैं एम्स में पहुँचा ? मुझे परमात्मा की कृपा के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता। मेरे से पहले कोई Veterinarian एम्स की फैकल्टी पर नहीं था, मेरे बाद भी कोई नहीं। मैं only one. I was in teaching faculty. मेरी नौकरी ही टीचिंग पोस्ट से शुरू हुई थी, as a lecturer in microbiology. उस वक्त मैंने अपनी पोस्ट ग्रेज्युएशन कम्पलीट कर ली थी। उसके बाद मैंने वहीं से पी–एच.डी. की। मैं फिर कहूँगा मुझे अपने में किसी प्रकार का कोई गुण दिखाई नहीं देता। पर इस चीज को मैं इन्कार नहीं कर सकता कि परमात्मा की अपार कृपा थी। शायद इसीलिये मेरी जिन्दगी को बदलकर रख दिया। भक्त प्रहलाद की तरह, नन्हा बालक था, एक दृष्टान्त देखो–किसी कुम्हार ने, बर्तन पकाने के लिये, आवा होता है। बर्तन पकाने के लिये आग जला दी है, बंद कर दिया है। सूचना मिली, इसके अन्दर बिल्ली के बच्चे हैं। कुम्हार के पास कोई और चारा नहीं था। आर्त्त–पुकार की परमात्मा से,'परमेश्वर! गलती मेरी है। मुझे पहले देखना चाहिये था। यह भूल तो मेरे से हो गयी, अब मैं कुछ कर नहीं सकता। तेरे सिवा हे अकालपुरख! इस वक्त उनका कोई रक्षक नहीं है। मेरी लाज रखना।' कुछ दिनों के बाद उसको खोला गया तो बच्चे जिंदा थे। बालक प्रहलाद की जिन्दगी बदल गयी। वह परमात्मा का, उस असीम शक्ति का, अनन्य भक्त बन गया। मैं भी इसी तरह से कहता हूँ, अपने ऊपर परमात्मा की, अहैतुकी, अकारण कृपा देख के तो मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया।

देवियो और सज्जनो ! जो मुझे मिला है, यदि मैं आपसे share नहीं करता, यदि मैं यह नहीं चाहता कि वही benefit, वही लाभ, परम लाभ आप सब को मिले, तो मैं कहूँगा कि मैं आपका अपना नहीं हूँ। एक मन में कसक है, बड़ी हार्दिक इच्छा है, परमेश्वर! जो कुछ तेरी कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है, वह इन सबको भी प्राप्त हो, क्योंकि ये मेरे अपने हैं। मैं इसी हैसियत से देवियो और सज्जनो! सच मानो, आज आपके सामने उपस्थित हूँ। अपना हूँ सो परमहित की बात करूँगा। संसारी उपलब्धियाँ तो बहुत हैं

आपके पास, मैं उनका विशेषज्ञ भी नहीं। मैं चर्चा नहीं कर सकता, लेकिन आज चर्चा का विषय थोड़ा भिन्न है, इससे आपके जीवनों की दिशा बदल सकती है। परमेश्वर करें ऐसा हो।

आप प्रायः कहते हैं Work is worship. बहुत सुन्दर बात है। It's an intellectual thought. आज साधकजनो! इसी पर चर्चा करेंगे। How to make work as worship? Work worship है, इसमें कोई शक नहीं है। How to make it worship? पूजा के दो पक्ष हैं– एक पेट पूजा, एक परमात्मा की पूजा। वास्तव में पूजा तो परमात्मा की ही है। पेट–पूजा इसलिये, बिन पेट पूजा परमात्मा की पूजा संभव नहीं है। दोनों पूजा होनी चाहिये। यह आप सब को स्पष्ट होना चाहिये। पेट की पूजा भी जरूरी, लेकिन यदि भगवत–पूजा साथ नहीं है तो यह पूजा तो पशु भी करता है। यह पूजा तो पंछी भी करता है। कोई शब्द आपको कटु लगे, कोई शब्द आपको लगे कि मैं डाँट लगा रहा हूँ या कोई ऐसा लगे कि मैं आपको झिड़की दे रहा हूँ तो मेरी माताओ और सज्जनो! मैं आप सब से हाथ जोड़ के क्षमा की भीख माँगता हूँ। पहले ही क्षमा कर दीजियेगा। जिसे हम पूजा कहते हैं साधकजनो, तनिक गम्भीरता से देखो तो वह मजदूरी है। जैसे सड़क पर रोड़ी कूटने वाला मजदूरी करता है, टोकरी ढोता है, शाम को daily wages के उसको पैसे मिल जाते हैं। जिनके Nursing Homes हैं, उनको भी ऐसे ही है। उनको 50–100 मिलते हैं, हमें हजार मिलते हैं, हजारों भी मिलते हैं। Superior मजदूर। माफ करना, पर यह सत्य है मजदूरी ही कर रहे हैं हम। जो employees हैं, उनको एक महीने के बाद salary मिलती है। Superior मजदूर। पर हैं तो मजदूर ही। इसे मजदूरी न रख के इसको कैसे पूजा बनाया जाये ? आज की चर्चा का यही विषय है।

जिन्दगी तो बनानी है, यह जिन्दगी का अंत नहीं है डॉक्टर बन जाना। आप सोचियेगा, समझियेगा, इस बात को सत्य मानियेगा, डॉक्टर बनने से आपको मुक्ति प्राप्त हो जायेगी, Salvation आपको प्राप्त हो जायेगी, Ultimate आपको प्राप्त हो जायेगा, the Beatitude of life आपको प्राप्त हो जायेगा, जन्म–मरण का चक्कर आपका खत्म हो जावेगा, तो यह गलत है। यह सही नहीं है। शास्त्र कहता है– उसके लिये आपको कुछ और additional करना होगा तो आपको वह प्राप्ति होगी। लक्ष्य जीवन का यही नहीं है। लक्ष्य कुछ और है। उसे प्राप्त कैसे किया जाये ? क्या ऐसे जिन्दगी बिताने से उस लक्ष्य की प्राप्ति हो जायेगी या जो हो उसी का संतोष रखने से इस जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो जायेगा, उद्देश्य की प्राप्ति हो जायेगी ? You will attain the Ultimate, आपको अपना aim जिन्दगी का मिल जायेगा। नहीं, शास्त्र सहमत नहीं है। Work is worship, No doubt, You 'll have to make it worship. इस काम को Worship बनाइयेगा तो यह होगा।

पार्थ (अर्जुन), आज अपने कर्त्तव्य से विमुख हो गया है। अपना सब कुछ छोड़–छाड़ के, जो कुछ भी उसका काम था युद्ध–क्षेत्र में, तीर चलाना है, युद्ध करना है, उस कर्तव्य से विमुख हो के अपना सब कुछ छोड़कर रथ के पिछले भाग में बैठ गया है। 'मैं युद्ध नहीं करूँगा। मैं भीख माँग के गुजारा कर लूँगा लेकिन मैं अपनों को मार नहीं सकता।' यह करुणा नहीं है। यह उसके अन्दर मोह जाग गया है, अपनों के प्रति । अपनों को मारने में वह परहेज कर रहा है। साथ वाले गाँव में जा के कहो कि कौरवों को नहीं उन गाँववालों को मारना है तो अर्जुन मार देगा। एक ही तीर से मार देगा। लेकिन अपनों को नहीं मारना चाहता। इसे शास्त्र, भगवानश्री diagnosis देते हैं, 'यह तेरी करुणा नहीं है। यदि करुणा है तो मोहजन्य करुणा है, मोह से उत्पन्न हुई, मोह से प्रेरित हुई यह करुणा है। यह करुणा का भाव नहीं है।'

पार्थ कहता है–'मैं कर्म नहीं करना चाहता, मैं भीख माँगने वाला योगी बनना चाहता हूँ। मैं भीख मांग के गुजारा कर लूंगा।' भगवानश्री कहते हैं, 'नहीं पार्थ! मैं तुम्हें योगी तो बनाऊँगा, लेकिन तुम्हें

भीख माँगने वाला योगी नहीं बनाऊँगा, तुझे कर्म करने वाला योगी बनाऊंगा।' यूँ कहियेगा आज जितने भी आप बैठे हुये हो, यह भगवानश्री का उपदेश आज सब आपके लिये है। भगवानश्री कहते हैं–पार्थ के माध्यम से मैं आपको कर्म करने वाला योगी बनाना चाहता हूँ। कर्म तो आप कर रहे हो, योगी मैं बनाऊँगा। मानो अपने कर्मों को किस प्रकार से करना है कि वह योग बन जाये, वह परमात्मा के साथ जुड़ने का साधन बन जायें। अभी तो नहीं है। कुछ के होंगे, जरूर होंगे ऐसा नहीं मैं कहता कि सब एक जैसे हैं। But by and large हमारे कर्म ऐसे नहीं हैं जो हमें परमात्मा के साथ जोड़ने वाले बनायें। भगवानश्री आज आपको ऐसी युक्तियाँ बतायेंगे, जिनसे वही कर्म जो आप कर रहे हो, डॉक्टरी का काम कर रहे हो, आप घर–गृहस्थी अपनी चला रहे हो, सब कर्म हैं। इन सब कर्मों की दिशा किस प्रकार से होनी चाहिये कि सब के सब कर्म आपके मोक्षदाता बन जायें। इस संसार में बन्धन का कारण न बनें। मानो एक बार गये, फिर दुबारा न आना पड़े। जन्म–मरण का चक्कर आप जानते हो कितना पीड़ादायक है! सब कुछ आप इतना बहुत अच्छे से जानते हो। जितना अच्छी तरह से आप जानते हो, सामान्य व्यक्ति नहीं जानता। आपने सब कुछ अन्दर का देख रखा हुआ है, कि अन्दर क्या है ?

'मैं तुम्हें भीख माँगने वाला योगी नहीं बनाना चाहता, तुम्हें कर्म करने वाला योगी बनाना चाहता हूँ।' भगवानश्री ऐसा ही करते हैं– जो–जो कर्म के साथ बन्धन के कारण हैं, उन सब कारणों को हटा के तो उसे योगी बना देते हैं। उसके अन्दर से वे दुर्गुण निकाल देते हैं, जिनके कारण कर्म बन्धन का कारण बन जाता है, इस संसार में युक्त होने का कारण बन जाता है, वह भगवान से युक्त नहीं होने देता। क्या कारण है साधकजनो ? सन्त–महात्मा समझाते हैं– कर्म सिद्धान्त समझाता है, कर्म तो जड़ है। उस बेचारे को कोई पता नहीं है कि यह कर्म बन्धन का कारण बनने वाला है, यह कर्म पापकर्म है या यह कर्म परमात्मा के साथ जोड़ने वाला है, मुझे योगी बनाने वाला है, योगयुक्त करने वाला है। कर्म तो बेचारा जड़ है। उसे इस बात का कोई बोध नहीं है। सन्त महात्मा समझाते हैं– कर्म किस भाव से किया जा रहा है ? यह निर्णय लेगा कि वह कर्म बन्धन का कारण बनेगा या आपके निर्वाण का कारण, आपके मोक्ष का साधन बनेगा।

For instance एक सैनिक युद्ध–क्षेत्र में, जितने अधिक लोगों की हत्या करता है, मारता है, उतना अधिक उसे शूरवीर घोषित किया जाता है। उसे medal मिलता है, उसे award मिलता है। भाव क्या है– देश की रक्षा। उस भाव से जितनों को भी वह मारता है, जितने अधिक मारता है उतना अधिक सिद्ध होता है कि वह उतना अधिक शूरवीर है, उसे medal मिलता है या कोई certificate मिलता है, कोई प्रशंसा–पत्र उसे मिलता है। वही सैनिक अपने गाँव में आता है, अपने गाँव में आ के किसी के साथ verbal तकरार होता है, आपस में कुछ नोंक–झोंक, लड़ाई झगड़ा होता है, एक थप्पड़ मारता है, दाँत बाहर निकलता है, थोड़ा सा खून निकलता है, उसी सैनिक को पुलिस के हवाले कर दिया जाता है। एक में शत्रुता का भाव है, दूसरे में देश की रक्षा का भाव है। कर्म, एक है। कर्म, दो नहीं हैं।

एक Surgeon जिस knife से surgery कर रहा है, Heart की surgery है, Bone की surgery है, पेट की surgery है, Leproscopy कर रहा है। कुछ भी कर रहा है। माँ–बाप शौक से अपने बच्चे को ले जाते हैं, 'Doc. Sahib! इस बच्चे का abscess incise कर दीजियेगा।' आप incision देते हैं, दवाई देते हैं, पैसे लेते हैं, शौक से माता–पिता कटाई भी करवाते हैं, शौक से आपको payment भी करते हैं। खुद लेकर जाते हैं अपने बच्चे को, कौन ले जायेगा कटवाने ? आज तकलीफ है, उसकी तकलीफ बढ़ न जाये, कहीं यह इसकी मृत्यु का कारण न बन जाये। आप incise करते हो

और pus सारी की सारी drain करते हो, antibiotics वगैरह देते हो, अपनी payment लेते हो, वो भी शौक से payment आपको देते हैं। वही knife यदि कभी अपनी wife से झगड़ा हुआ और उस पर प्रयोग कर दिया, तो वह आपको कचहरी में खड़ा कर देगी। भाव–अन्तर। एक में सद्भावना है, दूसरे में द्वेष की भावना है, शत्रुता की भावना है। दोनों के भीतर भाव है निर्णायक, यह कर्म बन्धन का कारण बनेगा या यह मोक्ष का साधन बनेगा।

आगे बढ़ते हैं साधकजनो! संत–महात्मा समझाते हैं, कर्म बन्धन का कारण कैसे बनता है ? कर्म मोक्ष का साधन कैसे बनता है ? व्यक्ति योगी कैसे बन जाता है ? संत–महात्मा समझाते हैं, तीन मार्ग हैं– एक तो मार्ग है प्रलोभनों का मार्ग, संसार का मार्ग। दूसरा मार्ग बीच का ऐसा भी है, जहाँ लोग पलायन करते हैं, कर्त्तव्य से विमुख हो जाते हैं। मैं नहीं करूँगा। एक भोग का मार्ग, एक पलायन का मार्ग। तीसरा मार्ग और है– जागने का मार्ग। यदि वह व्यक्ति जाग जाता है तो वह योगी बन जाता है। वह मार्ग किस प्रकार का है ? साधकजनो! इसी पर थोड़ी चर्चा करते हैं। कहते हैं, हमारे जीवन के दो पक्ष हैं – एक संसार का पक्ष है, एक भगवान का पक्ष है। मानो हमें इन दोनों से छुटकारा नहीं है। दोनों ही चाहियें। अर्जुन योगी क्यों बन गया ? अर्जुन ने अपने कर्मों को किस प्रकार से, किस होनहारी से, किस चतुराई से बदल दिया ? क्यों, उसने सबसे बड़ी समझदारी कर ली कि वह घर से चलने से पहले परमात्मा को साथ लेकर चला है। अपने जीवन–रथ की बागडोर परमात्मा को पकड़ा दी है। आप संभालो रथ, पकड़ो लगाम, तब मैं चलता हूँ। ये भूल लगभग हम सब से प्रायः होती है। हमारी जिन्दगियों में यदि आवश्यकताओं की सूची बनाई जाये तो God is least wanted. मैं फिर कहूँगा हरएक के साथ ऐसा नहीं है। But by and large, majority के साथ ऐसा ही है। सूची बनाओ किस–किस चीज की आवश्यकता है तो परमात्मा का शायद नम्बर सबसे अंत में आयेगा। Least wanted. प्रायः इस वक्त हम जवान हैं, कुछ मेरी तरह वृद्ध भी होंगे (बैठे हैं बीच में) प्रायः हमारी सोच इस प्रकार की होती है, यह परमात्मा की पूजा बूढ़े होंगे तो कर लेंगे, अभी तो काम करने का समय है। जिन्दगी की सबसे कमजोर अवस्था, सबसे बुरी अवस्था वृद्धावस्था, अपने आप में रोग है। इससे कोई बच नहीं सकता, अनिवार्य अवस्था है। न बैठा जाता है, कई सारे functions बहुत धीमे हो जाते हैं, ऐनक लग जाती है, सुनना कम, दिखाई देना कम, पाचन शक्ति कम, सब कुछ कम, कम, कम, कम होता जाता है। उस वक्त जब आदमी कुछ भी करने योग्य नहीं, कम से कम ऐसा तो नहीं जो जवानी में किया जा सकता था। उस वक्त आप इतने महान काम करने का सोच रहे हो, यह सोच ठीक नहीं है।

अतएव आपसे प्रार्थना करूँगा– Don't waste your time anymore. जागो! अभी से उठो, अभी से आगे बढ़ो, ऊपर चढ़ो, उन्नत होवो, उदात्त होवो, elate yourself, अपने thought processes को बदलो। बाकी कर्म तो कर्म ही रहेगा। अपने भाव को बदल कर अपने कर्म को उस परमात्मा से जुड़ने वाला बना दीजियेगा। योगी बन जाइयेगा। आपसे अर्ज की जा रही थी दो नावों में हमारे पाँव हैं। एक संसार की नाव है, दूसरी परमात्मा की। हमें पता है कि हम उसके बिना गुजारा नहीं कर सकते। हमारा गुजारा नहीं हो सकता। यदि इस भ्रान्ति में हैं हम, उसके बिना हमारा गुजारा चल रहा है तो यह बहुत देर तक नहीं चलेगी। आपको स्वयं को महसूस होगा Now He is most wanted in our lives. उसके बिना जिन्दगी अधूरी है। एक पाँव इधर रखा है, एक पाँव उधर रखा है तो व्यक्ति लड़खड़ायेगा। गिरने की संभावना बनी रहेगी। कुछ नहीं करना, मात्र इतना ही करना है उन दोनों नावों को एक बना के रखना है। अब आप एक बना के उस पर नाचो। दो नाव एक हो गयी हैं। सांसारिक नाव को आपने उसका, आध्यात्मीकरण कर दिया है। उस सांसारिक नाव को भी आपने आध्यात्मिक बना दिया है। बस

इतना ही करने की आवश्यकता है। अब आप उस पर सामान अधिक रख सकते हो, यात्री अधिक बिठा सकते हो, निश्चिंत हो के, निर्भय हो के, उस पर जो आप करना चाहो कर सकते हो।

कैसे करना है आध्यात्मीकरण ? क्या दोष हैं साधकजनो इस कर्म के साथ जुड़े हुये ? जो मुझे आज का विषय दिया गया था वो तो यह था– 'दवा के साथ दुआ'। दवा देने के लिये qualification चाहिये, You are qualified. क्या दुआ करने के लिये कोई qualification नहीं चाहिये ? यदि चाहिये, अपने आप से पूछ कर देखो Are you qualified to do so? जैसे दवा देने के लिये आप qualified हो। हरएक दवा नहीं दे सकता। Judge साहब बैठे हुये हैं ये दवा नहीं दे सकते। दवा वही दे सकेगा जिसने M.B.B.S. की हुई है, M.D. की हुई है, M.S. की हुई है और कोई दवा नहीं दे सकता। BAMS देगा या Homoepath देगा। वे qualified हैं। लेकिन Judge, कुर्सी बहुत ऊँची है लेकिन वह दवा नहीं दे सकता। जिस प्रकार दवा देने के लिये qualification की आवश्यकता है ठीक उसी प्रकार से दुआ के लिये भी qualification की आवश्यकता है। पहले अपने आपको qualified करो तो फिर आप दुआ कर सकोगे। मैं तो यूँ मानता हूँ देवियो और सज्जनो! यदि आप यह समझो कि दुआ को आप अपने कर्म से अलग कर सकते हो तो यह संभव नहीं है। You have no time. तो करना यही होगा कि अपने कर्म को ही किस प्रकार से बदला जाये कि यह दवा भी बन जाये और दुआ भी बन जाये। आपके पास अलग से समय नहीं है। रात को किस वक्त call आ जाती है आपको, कोई कुछ नहीं कहा जा सकता। सुबह 4 बजे आपको मैं कहूँ ब्रह्म मूहूर्त में उठियेगा, उठकर उपासना कीजियेगा ताकि आप दुआ करने के competent हो सकें तो यह सम्भव नहीं है। आप कहोगे मूर्ख है, कैसी बातें करता है! इसको हमारी जिन्दगी से परिचय नहीं। हमारी जिन्दगी कितनी व्यस्त है! मैं इन सब बातों को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। I realize. तो एक ही चीज़ बचती है, अपने कर्म जो जिसके बिना, जिनके किये बिना व्यक्ति रह नहीं सकता, जो हरएक को करना ही करना है, करना ही पड़ेगा। जब तक परमात्मा, परमात्मा या प्रारब्ध कहियेगा, आपको कर्म करने अयोग्य न बना दें, तब तक आप कर्म करते ही रहेंगे, कर्म होते ही रहेंगे। इनका आध्यात्मीकरण कैसे किया जाये ? इनको कैसे बदला जाये कि हम कर्मयोगी बन जायें ताकि हमारे कर्म परमात्मा का पूजन बन जायें ?

कर्मयोगी, कितना सुंदर शब्द है! कर्मयोगी अपने कर्मों को इस प्रकार से बना लेता है जैसे बीज भूमि में बोया जाता है तो अंकुरित होता है, बड़ा होता है, पेड़ बन जाता है, फूल लगते हैं, फल लगते हैं इत्यादि, इत्यादि। उसी बीज को यदि भून लिया जाये, उसी बीज को यदि उबाल लिया जाये, तो फिर भूमि में डाला जाये तो वह अंकुरित नहीं हो सकता है। बीज तो रहता है, लेकिन अंकुरित नहीं हो सकता है। एक रस्सी बाँधने के काम आती है। उसी रस्सी को जला दिया जाये, shape तो उसकी रस्सी जैसी बनी रहती है लेकिन वह बाँधने के काम नहीं आ सकती। Useless हो गयी है। संत–महात्मा समझाते हैं– कर्मयोगी अपने कर्मों को बिल्कुल इसी प्रकार का बना लेता है जो उसमें बाँधने की capacity है, वह खत्म कर देता है। यह कैसे करें ? इसलिये साधकजनो! सबसे पहली बात आप दुआ करना चाह रहे हो, अपने कर्मों का आध्यात्मीकरण करना चाह रहे हो, दिव्य बनाना चाह रहे हो तो यह कैसे करें ?

सर्वप्रथम आपको परमात्मा की existence में पूर्ण विश्वास होना चाहिये। परमेश्वर की कृपा है, हम उस देश में रहने वाले हैं, ऐसे वातावरण में रहने वाले हैं जहाँ हमें परमात्मा पर पूर्ण विश्वास है। वह है, एक सत्ता है, एक शक्ति ऐसी है, जिसे Super Power कहा जाता है। बहुत बड़ी Power कहा जाता है, जिस जैसी Power इस संसार में नहीं है। यदि कोई ऐसे बैठे हों, तो आज से साधकजनो! इस भाव को छोड़ दीजियेगा। मैं request भी करूँगा, आपसे प्रार्थना भी करूँगा, निवेदन भी करूंगा, हाथ

जोड़ के विनती भी करूँगा।

एक महिला अध्यापिका है। आज न जाने किस mood में है ? परमात्मा में विश्वास नहीं रखती है। Classroom में किसी बच्ची को पूछती है, 'बाहर देख के बता क्या–क्या है ?' कहा, 'इस तरफ playground है, इस तरफ एक बगीचा है।' 'और क्या है ?' 'आकाश दिखाई देता है, इत्यादि इत्यादि।' जो कुछ भी दिखाई दिया सब कुछ बतलाया। अध्यापिका पूछती है, 'कहीं परमात्मा भी दिखाई देता है ?' कहा, 'Ma'am नहीं। वह तो दिखाई नहीं देता।' 'अरे, जो है ही नहीं वो दिखाई कहाँ से देगा ?' यह उसका argument है। एक दूसरी बच्ची बैठी हुई है, उसकी class fellow. खड़ी हो के कहती है, 'Ma'am! जिस बच्ची से आपने प्रश्न पूछा है, मुझे भी कुछ प्रश्न पूछने की इजाजत है ?' 'हाँ, पूछो।' यह बच्ची पूछती है उसका नाम ले के, 'Ma'am दिखाई दे रही है ?' 'हाँ–हाँ, सामने खड़ी है।' 'क्या–क्या दिखाई दे रहा है ?' 'दो आँखें, दो कान दिखाई देते हैं,दो नासिका के छिद्र, लम्बे लम्बे बाल हैं, जूड़ा किया हुआ है, साड़ी पहने हुई है, इत्यादि इत्यादि।' जो कुछ भी दिखा सब कुछ वर्णन कर रही है। यह बच्ची पूछती है, 'अरे इस Ma'am की बुद्धि भी दिखाई दे रही है कि नहीं दिखाई दे रही ?' कहा, 'वह तो नहीं दिखाई दे रही।' तो यह बच्ची झट से कहती है,'जो है ही नहीं वो दिखाई कहाँ से देगी ?' स्थूल तो दिखाई देगा मेरी माताओ और सज्जनो! लेकिन सूक्ष्म देखने के लिये आपकी दृष्टि सूक्ष्म होनी चाहिये। तब दिखाई देगा। अंगुल कट सकती है लेकिन विचारों को नहीं काटा जा सकता। पीड़ा महसूस हो सकती है लेकिन पीड़ा दिखाई नहीं देती। सूक्ष्म, अति सूक्ष्म है परमात्मा।

कहते हैं साधकजनो! एक बार राजा अकबर ने बीरबल से पूछा, 'तुम्हारा राम कहाँ रहता है ?' बीरबल आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं था। राजनीति सम्बन्धी,राज्य सम्बन्धी, संसार सम्बन्धी सारे उत्तर वह दे सकता था, वह देता था। आज बड़ी भारी समस्या खड़ी हो गयी। 'यह आध्यात्मिक, मैं non आध्यात्मिक person, मैं इन बातों का उत्तर राजा को कैसे दूँ ?' Very witty person. झट से जवाब देने वाला, बीरबल आज मुँह लटकाकर घर चला गया। पुत्र ने पूछा, 'क्या बात है ?' 'राजा अकबर ने आज ऐसा प्रश्न पूछा है। क्या उत्तर दूँ ? मेरे पास इस बात का कोई उत्तर नहीं है। मुझे नहीं पता राम कहाँ रहता है ?' 'मुझे पता है।' लड़का कहता है। 'मैं जवाब दूँगा' आज राजसभा में जा के खड़ा हो गया। राजा से कहता है, 'मैं जवाब दूँगा, आपके प्रश्न का। अभी तो मेरे लिये दूध मँगवा दीजियेगा। दूध पीना चाहता हूँ।' दूध मँगवाया। भरा कटोरा दूध जब आया तो अपने आगे रखके हिलाना शुरू कर दिया। पहले इस तरफ फिर इस अंगुली से इस तरफ। 'क्या कर रहे हो ?' 'सुना है राजा साहब, दूध में मक्खन होता है, घी होता है, उसमें ढूँढ रहा हूँ।' 'मूर्ख, ऐसे मक्खन मिलता है ? ऐसे अंगुली घुमाने से मक्खन मिलेगा ?' 'फिर कैसे मिलेगा ?' बच्चा पूछता है। कहा, 'इसको उबालना पड़ता है, ठंडा करना पड़ता है, इसका दही जमाना पड़ता है, इसे बिलोना पड़ता है, इसमें यह चीज डालनी पड़ती है, वो चीज डालनी पड़ती है, फिर मक्खन आता है, उसको इकट्ठा किया जाता है।' बच्चा कहता है, 'राजा साहब, जिस प्रकार दूध के कण–कण में मक्खन है, घी है लेकिन दिखाई नहीं देता। ठीक उसी प्रकार से वह राम, वह परमात्मा भी संसार के कण–कण में व्याप्त है, लेकिन दिखाई नहीं देता। उसके भी methods हैं देखने के लिये। उसके लिये भी methods हैं अनुभव करने के लिये। उन methods को अपनाओ। आपका जीवन साधनामय बने, आपका जीवन भक्तिमय बने, आपका जीवन एक योगी का बने तो आपको अनुभव होगा परमात्मा का, कि परमात्मा हर पग, हर पल, हर जगह, सर्वत्र, विद्यमान है।'

पार्थ! मैं तुम्हें कर्म करने वाला योगी बनाना चाहता हूँ। कैसे ? योगी बनने के लिये किस प्रकार का भाव होना चाहिये कर्म के पीछे ? जिस कर्म के पीछे अपने सुख की चाहत है, जिस क़र्म के पीछे सांसारिक

सुख की चाह है, वह कर्म कभी परमात्मा की पूजा नहीं बन सकेगा। मोटी–मोटी भक्तजनो! आपसे बातें अर्ज कर रहा हूँ, मेहरबानी करके इन कुछ को भी पल्ले बाँध सकोगे, जीवन में उतार सकोगे तो मैं आपको guarantee देता हूँ, आज से ही आपका जीवन जो है, वो बदलना शुरू हो जायेगा। Forget about your सुख। 'सारे संसार की सम्पत्ति आपको मिल जाये, सांसारिक सुख तो दे सकती है, अभिमान तो दे सकती है, लेकिन उससे मोक्ष नहीं मिलेगा। सुख दे सकेगी। गृहस्थ–जीवन आपका अच्छा हो सकेगा पैसे से। जो पैसा सुख देने वाला है। बस इससे आगे का जो सुख है जिसे परम सुख कहा जाता है, जिसे शाश्वत सुख कहा जाता है, वह इससे नहीं मिलेगा।'

जहाँ अंगुली आपकी अपने स्वार्थ की तरफ है, जो कुछ भी आप कर रहे हो वह इसलिये कर रहे हो कि इससे मुझे सुख मिलेगा। आप धन्यवाद सुनना चाहते हो, आप यशमान चाहते हो, आप चाहते हो कि आपकी शोहरत जो है, बनी रहे। दो भावों से वह कर्म किया जाता है साधकजनो! स्वामी जी महाराज लिखते हैं– धन्यवाद से लेके स्वर्ग सुख तक की चाह यदि आपके अन्दर है तो वह कर्म आपके बन्धन का कारण ही बनेगा, आपको वह परमात्मा से मिलन नहीं करवा सकता। अपने सुख को भूल जाइयेगा। इसी को स्वार्थ कहा जाता है। जो अपने सुख के लिये व्यक्ति करता है तो उसे स्वार्थ कहा जाता है। तो एक स्वार्थ, कर्म से निकलना चाहिये कि कहीं स्वार्थ के कारण तो आप कर्म नहीं कर रहे ? सोचियेगा। यदि ऐसा है तो स्वार्थ को please eliminate कर दीजियेगा, अपने सुख की चाह eliminate कर दीजियेगा। फिर किसलिये करना है ? कर्म करना मेरा कर्तव्य है इसलिये कर्म करना है।

बच्चे हैं, पुत्र है, आप उसकी पालना कर रहे हो। बहुत अच्छी बात है। यदि यह लक्ष्य है कि बड़ा हो के मेरी सेवा करेगा तो यह कर्म इतना सुंदर होने के बावजूद भी आपके लिये बंधन का कारण बन जावेगा, यह मोक्ष का साधन नहीं बनेगा। अपने पुत्र को, पत्नी को, अपने परिवार को पालना मेरा कर्त्तव्य है इसलिये सब कुछ कर रहा हूँ, यह कर्म आपका पूजा बन जायेगा।

जहाँ सांसारिक अपेक्षा है, वही कर्म आपके बन्धन का कारण बन जायेगा, कोई इससे बचा नहीं सकेगा आपको। आदमी झाड़ू लगाता है, अपने आप सफाई होती है, फिर सफाई को लक्ष्य क्यों बनाना ? सफाई तो अपने आप होगी। आपका कर्म करना काम है, कर्म करना कर्त्तव्य है, कीजियेगा। फल पर तो आपका अधिकार ही नहीं है, आपके हाथ में भी नहीं है। कब आपको परमात्मा यशस्वी बना देगा और कब आपका किसी कारण से अपमान करवा देगा, यह सब उसके अधीन है। जो उसके अधीन है जो अपने अधीन ही नहीं है, उस पर क्यों माथापच्ची करनी ? यदि आप कहो कि हमारी करनी से हमें सब कुछ मिल रहा है। हमारी हर इच्छा पूरी हो रही है तो साधकजनो! शास्त्र समझाता है कि अब यही समझो कि जो आपकी इच्छा है वह परमात्मा की इच्छा है, तभी आपकी इच्छा पूरी हो रही है अन्यथा इच्छा तो एक ही है और वह है परमात्मा की इच्छा, उसी से सब कुछ होता है।

दूसरा बिन्दु, अर्जुन घर से निकला है वह परमात्मा को साथ ले के निकला है। कल सुबह आप भी घर से निकलो तो अकेले नहीं निकलना, परमात्मा को साथ ले के चलना। राम जी मेरे साथ–साथ चलो, वाहे गुरू जी मेरे साथ–साथ चलो, हे परमेश्वर! मेरे साथ–साथ चलो और मेरे साथ–साथ रहना। अभ्यास की जरूरत है, परमात्मा की कृपा की जरूरत है। Surgeon यह कहे कि मेरे हाथों से परमात्मा तेरी कला काम करे। देखना, जिस दिन यह बात करके आप surgery करोगे, आपको operation करने के बाद coffee पीने की या चाय पीने की जरूरत नहीं पड़ेगी। There is no थकान at all. थकान यही है कि मैं करने वाला हूँ, मैंने यह किया, मैंने वो किया, इतने घंटे की surgery की, इतने

patients आज देखे हैं, यह किया है, वो किया है। मैं फिर कहूँगा देवियो! वह तो मजदूरी है। आपने काम किया, patient को देखा, धन्यवाद भी मिला, पैसे भी मिले, जो आपने काम किया उसकी मजदूरी आपको मिल गयी। इसको पूजा बनाना चाहते हो तो साधकजनो! आपको ये इन बातों को बीच में से निकालना होगा। फल की इच्छा न रहे, कुछ नहीं चाहिये परमात्मा तेरा दिया हुआ बहुत है। फल नहीं चाहिये। सब तेरे निमित्त हैं। तू करवाने वाला है। यह कब करवाना बंद कर देगा, क्या मेरे बस की बात है ? क्या यह मेरी इच्छा से कुछ हो रहा है ? यह सत्य है, देवियो! जितना ही उनके नजदीक पहुँचते जाओगे उतना ही आपको शान्ति का अनुभव होने लगेगा। अभी अशान्ति का वातावरण है। अशान्ति ही अशान्ति है। सब कुछ कर रहे हो। संसार की कौन सी ऐसी चीज है जो आपके पास नहीं है ? You are the elite. आप cream हो संसार की, देश की cream हो आप। Yet. यह सब कुछ होने के बावजूद भी एक ही slogan है आपका, सब कुछ है पर शान्ति नहीं है। शान्ति कैसे हो सकती है ? यदि कारण, हमारे जितने भी हैं, सब अशान्ति वाले हमने खत्म नहीं किये तो शान्ति कैसे हो सकेगी ?

फल की इच्छा का त्याग कीजिये। मैं कुछ कर सकता हूँ, मैं कुछ करने वाला हूँ। I am the doer. इस doership को eliminate करियेगा, तो शान्ति आपको लाभ होगी। परमात्मा को अपने अंग–संग रखियेगा। परमात्मा मुझे दिखाई दे रहा है,तेरी कला इन हाथों में काम कर रही है। I treat You cure. मैं इतना ही कर सकता हूँ, मेरी इतनी ही qualification है। मुझे पता है इस रोग के लिये दवाई क्या देनी है, मैं दवाई ही दे सकता हूँ। यदि मेरी दवाई से ही सब ठीक होने वाले हों तो फिर मरे कौन ? Cure is entirely in His Hands. Don't forget it. ऐसी ऐसी बातें याद रखोगे देवी! तो अपने आप आपके अन्दर से doership, कर्त्तापन का अभिमान जिसे कहा जाता है, मिथ्या अभिमान जिसे कहा जाता है। मैं करने वाला हूँ, मैंने यह किया, मैं नहीं करूँगा, तो कौन करेगा, मैंने न किया हुआ होता, तो मेरे घर का क्या होता ? योगी के कर्म के पीछे न राग होता है न द्वेष होता है। राग होगा, तो पक्षपात होगा। जज साहिब के सामने अपना पुत्र अपराधी बनके आ जाये, दिल की दशा देखना इनकी कैसी होती है ? वहीं पर आदमी परखा जाता है। मेरे कर्म के पीछे राग काम कर रहा है ? द्वेष काम कर रहा है ? कहाँ मैं पक्षपाती होता हूँ ? या पक्षपातरहित ? कर्मयोगी, पक्षपातरहित होते हैं। यह मेरा शत्रु है, इसने मेरा यह नुकसान किया था इसलिये इस वक्त मैं इसे नहीं देखूँगा इत्यादि, इत्यादि। ये कर्मयोगी के कर्म नहीं होते। योगी इन बातों में उलझता ही नहीं है। योगी के कर्म राग और द्वेष से प्रेरित नहीं होते।

एक योगी की बात याद आती है। एक गाँव के पास में, छोटा सा आश्रम है । एक योगी वहाँ रहता है। गाँव के युवकों को योग सिखाता है। कुछ क्रियायें सिखाता होगा। परमात्मा के अस्तित्व के बारे में बताता होगा, 'बेटा, परमात्मा को अपने अंग–संग रखना, स्वयं परमात्मा के अंग–संग रहना। उसकी उपस्थिति मानना। अपने भीतर, बाहर सब जगह विद्यमान है।' वह राम सबका है बेटा! वो राम किसी एक सम्प्रदाय का नहीं है। वो राम केवल हिन्दुओं का नहीं है। शास्त्र कहता है– वह राम जिसके हम उपासक हैं, जिसकी हम उपासना करते हैं, वह राम हिन्दुओं का भी है, सिक्खों का भी है, सबका है। जो सबका है वही राम है। मुसलमानों ने भी राम–राम जपा है, सिक्खों ने भी राम–राम जपा है, बाबा नानक राम–राम ही जपा करते थे। ऐसी सुन्दर–सुन्दर बातें वह योगी समझाता है। आज उस गाँव पर कुछ शरारती तत्वों ने हमला कर दिया है। एक उनका सरदार है, कुछ और साथी हैं, हमला कर दिया है। बेचारे गाँव वाले सीधे–सादे लोग, खूब मार–पिटाई हो गयी है। खूब मार खाई है उन्होंने। भागते–भागते योगी के पास गये हैं। कहा, 'योगीराज, हम भारी आपत्ति में हैं, इस प्रकार से हमारे ऊपर आक्रमण हो गया है। मेहरबानी करके हमारी रक्षा करो।' कहा, 'भाई, मैंने कभी युद्ध नहीं किया। वहाँ

तो युद्ध है। मैं तो योगी हूँ। मैंने कभी लड़ाई–झगड़ा किसी से किया ही नहीं। Verbal ही नहीं किया तो मैं कैसे करूँगा ?' 'नहीं बाबा, हमारी सहायता कीजियेगा।' 'ठीक है।' राग–द्वेष से प्रेरित कर्म नहीं है। परमेश्वर की प्रेरणा समझ के तो अपने हाथ में तलवार ले के घोड़े पर सवार हो के योगी चल पड़ा है। जा के सरदार को कहा, 'भाई, आप जानते हो कि मैं किस profession से हूँ ? महात्मा हूं, योगी हूँ। मैंने कभी युद्ध नहीं किया। लेकिन आपका बिना किसी कारण इन पर आक्रमण मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। इसलिये परमेश्वर की प्रेरणा है भीतर से। उसकी प्रेरणा से आपके सामने आया हूँ। बाकियों को छोड़, आओ दोनों आपस में युद्ध कर लेते हैं। फैसला कर लेंगे। जो जीत जायेगा, बस उसकी जीत। जीत की ध्वजा उसके हाथ में होगी।' 'ठीक है।' सरदार, जो मुखिया है उनका, वह बहुत confident है, यह क्या लड़ेगा, मेरे साथ ? हुआ यूँ साधकजनो! महात्मा योगी, परमात्मा का आश्रय ले के निकला हुआ है। परमात्मा को साथ ले के निकला हुआ है तो फिर सफलता क्यों न मिलेगी ? फिर मंगल क्यों न होगा ? फिर कल्याण क्यों न होगा ? जो परमेश्वर को साथ रखेगा, जो परमेश्वर के साथ रहेगा, ये सब चीजें उसे अनायास ही प्राप्त होती जायेंगी। क्यों ? वह सत्ता, जो पूर्णता प्रदान करने वाली सत्ता है, वह साथ में है। कर्ण से क्या कमी रह गयी थी ? शास्त्र कहता है– कर्ण अर्जुन से कहीं योग्य था। हर field में, हर क्षेत्र में। एक ही कमी उसकी जिन्दगी में रह गयी, अर्जुन ने उस पूर्ण करने वाली सत्ता को अपने साथ रखा और वह उस सत्ता से विमुख रहा। बस यही उसकी हार का कारण बना। अन्यथा कर्ण, ज्येष्ठ पांडव जिसे कहा जाता है, वह ज्येष्ठ पांडव किसी से मरने वाला नहीं था। उसकी जिन्दगी में एक ही कमी रह गयी, जो पूर्णता प्रदान करने वाली सत्ता, जिसे परमात्मा कहा जाता है, वह उससे दूर रहा और अर्जुन ने उस सत्ता को अपने साथ रखा। योगी ने युद्ध किया, खूब घमासान युद्ध हुआ। इतना तड़पाया है सरदार को, इतना तड़पाया है सरदार को कि सरदार नीचे गिर गया है। घोड़े से उतर के उसकी छाती पर बैठ गया है। योगी गला काटने को तैयार है। अपनी तलवार मारने को निकाली। उसी वक्त नीचे पड़े हुये सरदार ने, जो मुखिया है उस गुट का, योगी के मुख पर थूक दिया। जब थूका, योगी ने अपने हाथ से तलवार फेंकी, कहा, 'उठ, दुबारा युद्ध करते हैं।' कितनी मार्मिक बात आपकी सेवा में अर्ज करने जा रहा हूँ। 'उठ दुबारा युद्ध करते हैं।' सरदार कहता है, 'कैसे योद्धा हो ? नीचे पड़े हुये को, बिल्कुल इतनी ही चीज चाहिये थी कि तलवार मारते मेरा गला अलग कर देते। मुझे उठने के लिये क्यों कह रहे हो ? मुझे छोड़ा क्यों ? क्या बात है ?' योगी उत्तर देता है, कहता है, 'मैं एक योगी हूं, मेरे कर्म परमात्मा द्वारा प्रेरित कर्म हैं। मेरे कर्म राग–द्वेष द्वारा प्रेरित कर्म नहीं हैं। मेरे कर्म क्रोध द्वारा प्रेरित कर्म नहीं हैं। मेरे कर्म बदले की भावना लेने वाले कर्म नहीं हैं। मेरे कर्म अभिमान प्रेरित कर्म नहीं हैं। मेरे कर्म स्वार्थ प्रेरित कर्म नहीं हैं। मैं एक योगी हूँ। मैं इन सब चीजों से ऊपर उठ चुका हूँ। जिस वक्त तूने मेरे मुख पर थूका उस वक्त मेरे अन्दर तेरे प्रति द्वेष आ गया था। यदि उस वक्त मैं तलवार मार देता तो यह एक योगी का कर्म न होता, यह एक द्वेषी का, यह एक शत्रु का कर्म होता, यह मेरे बन्धन का कारण बन जाता और मैं बँधना नहीं चाहता।'

ऐसे ही योगी बनो। आपके कर्म, राग और द्वेष द्वारा प्रेरित कर्म नहीं होने चाहिये। आपके कर्म अभिमान द्वारा प्रेरित कर्म नहीं होने चाहिये। क्रोध द्वारा प्रेरित कर्म नहीं होने चाहिये, ईर्ष्या द्वारा प्रेरित कर्म नहीं होने चाहिये। द्वेष द्वारा प्रेरित कर्म नहीं होने चाहिये। मेरी माताओ और सज्जनो! आपको बेशक ये बातें आज बड़ी–बड़ी लग रही हों, लेकिन बहुत काम की बातें हैं, इन्हें जीवन में उतारने में परहेज न करना। Don't delay anymore. अपने जीवनों को बदलो, बहुत बदलने की जरूरत है। इससे कुछ नहीं बनने वाला। मैं फिर कहूँगा इससे सांसारिक सुख तो मिल जायेगा लेकिन परम सुख नहीं

मिलेगा। कल से इस प्रकार की भावना करो, सुख भोगने की चीज नहीं है, शब्द याद रखो– सुख भोगने की चीज नहीं है, सुख बाँटने की चीज है। औरों को देने की चीज है। जो औरों को सुख देते हैं, परमात्मा उन्हें परमसुख देता है, शाश्वत सुख देता है, eternal happiness देता है। जो दूसरों के दुःख में दुःखी होता है, उसे अपने दुःख याद करने का अवसर ही नहीं मिलता। दुःख हरएक की परिक्रमा लेता है, nobody is spared. अपने कर्मों के अनुसार दुःख तो आता ही रहेगा। लेकिन जो दूसरों के दुःख से दुःखी होता है। हमारी हालत क्या है ? आज किसी से लड़ाई–झगड़ा हुआ, पड़ोसी से लड़ाई–झगड़ा हुआ। बोलचाल बंद हो गयी। कुछ दिनों के बाद पड़ोसी का लड़का death bed पर। इतना बीमार, इतना बीमार। आप सहानुभूति उसे जतलाने की बजाये घर बैठे–बैठे प्रसन्न होते हो। ठीक है, कल परसों हमारे संग लड़ा था। हम दूसरों के दुःख को देख के दुःखी नहीं होते। हम दूसरों के दुःख को देख के सुखी महसूस करते हैं और दूसरों को सुखी देख के तो दुःखी महसूस करते हैं। अपने ही दुःख कम नहीं हैं। इतने दुःख हैं, इतने दुःख के कारण हैं। एक दुःख हमने अपने जीवन में यह भी बना लिया है, अमुक व्यक्ति, अमुक मेरा senior मेरे से आगे क्यों निकल गया है ? उसको promotion क्यों मिल गयी है ? हमें किसी भी घटना में परमात्मा की करनी दिखाई नहीं देती, अतएव दुःखी हैं। हर घटना में परमात्मा की करनी दिखाई क्यों नहीं देती ? क्योंकि हम करने वाले हैं ना। अपनी doership निकालोगे तो बहुत लाभ होगा।

डॉक्टर भी हो, लेकिन एक गृहिणी भी हो। भोजन बनाती हो, देवी! बनवाती हो, Let's say बनाती हो। जो भोजन बनाती हो पति भी खाता है, परिवार भी खाता है, सब खाते हैं। कभी–कभी पूछ भी लेती हो, 'आज पुलाव कैसा बना है ?' पति कहते हैं, 'बहुत स्वाद! ऐसा पुलाव पहले कभी नहीं खाया।' पूछने का कारण भी यही था कि वे मेरी प्रशंसा करें। जहाँ यह भाव रहेगा देवियो! वहाँ मार खा जाओगे। भोजन बनाया है, परिवार को खिलाया है, खाया है, पति प्रसन्न, आपने भी खाया है। यही भोजन आप इस भाव से बनाओगी–ठाकुर के लिये भोजन। आपको भी मिलेगा प्रसाद, पति को भी मिलेगा प्रसाद, सारे परिवार को भी मिलेगा। भोजन तो सबको ही मिलेगा। लेकिन भाव इतना उच्च हो गया है, एक परिवार के लिये भोजन बनाना, अपने पेट के लिये भोजन बनाना, एक भोजन परमात्मा के लिये बनाना और उसका दिया हुआ प्रसाद हम खायें। जमीन–आसमान का अंतर है। एक कर्म बन्धन का कारण बन जाता है, दूसरा कर्म मोक्ष का साधन बन जाता है।

एक छोटा सा उदाहरण और है, समय होने वाला है। आज एक महिला के पति विदेश गये हुये थे लगभग दस साल के बाद लौटे हैं। बड़ी प्रसन्न है महिला, दस साल के बाद पति आये हैं। बड़े घर की महिला है। meetings में भी जाना पड़ता है, kitty parties इत्यादि सब चीजों के लिये। सबेरे की flight थी, घर आये हैं। दोपहर का खाना अपने हाथों से बनाया है। दोनों इकट्ठे बैठकर dining table पर खाना खाते हैं। पूछती है, 'मेरे हाथ के दम आलू इतने वर्षों बाद खाये हैं, क्या कभी वहाँ खाने को मिलते थे ?' पति प्रसन्न करने के लिये कहते हैं, 'जब भी मिलते थे तेरी याद बहुत आती थी। तेरे हाथ के बने आलू जैसा स्वाद नहीं होता था, पर खाता था, तेरी याद आती थी।' रामू! head cook, उसे बुलाकर कहा, 'रात को मेमसाब का आज खाना बाहर है, साहब आये हैं इतने वर्षों के बाद, रात का खाना, ये–ये चीजें मैंने दोपहर को बनाई थीं, रात को ये ये चीजें बनाना, जो साहब को पसन्द है।' रामू कहता है,'मेम साब! आप चिन्ता न करो, मुझे सब कुछ याद है, बड़े साहब को क्या–क्या चीज पसन्द है। मैं वही बनाऊँगा और बहुत स्वादु बनाऊँगा।' दोपहर का भोजन करके, वह पति को घर छोड़ स्वयं जहाँ जाना था, वहाँ चली गयी। आज बहुत खुश है। जहाँ गयी वहाँ सहेलियाँ मिलीं, 'क्या बात है ?

आज बहुत खुश,जैसे नाच रहा हो व्यक्ति, ऐसे दिखाई दे रही हो ?' 'आज वो आये हैं।' कहती है, 'आज वो आये हैं दस साल के बाद, बहुत प्रसन्न है।' रात का dinner तैयार किया है रामू ने। लगा दिया है table पर। खाना शुरू किया है। 'बड़े साहब इतने वर्षों के बाद मेरे हाथ का chinese food खा रहे हो, कभी वहाँ भी chinese food खाते वक्त मेरी याद आई कि नहीं आई ?' बिल्कुल same question. साहब ने रामू को प्रसन्न करने के लिये कहा, हाँ रामू,'यह खाते वक्त तेरी याद आती थी।' सामान्य दिन जब बड़े साहब नहीं आये थे, तो 10 बजे के आसपास जो खाना बचा हुआ था वो सब कुछ ले के अपने servant's quarter में चला जाता था। परिवार वहाँ इंतजार कर रहा होता था। आज 11.30 बज गये हैं। खाना तो काफी बचा हुआ है, बच्चे घर इंतजार कर रहे हैं। पत्नी ने जाते ही पूछा, 'क्या बात है, आज इतनी लेट हो गये हो ?' 'ओह, आज बड़े साहब आ गये हैं। इन लोगों का क्या जाता है मुँह हिल जाता है, यह–यह बनाना है, यह–यह बनाना है इत्यादि–इत्यादि। बनाते–बनाते इतना काम करते, बर्तन साफ करते–करते, इतना समय हो गया।' देवियो! कर्मयोग क्या है ? यह नौकर, काम तो मालिक के घर कर रहा है, दृष्टि अपने परिवार पर है। यहाँ कर्त्तव्य निभा रहा है, दृष्टि उधर है, वहाँ जुड़ी हुई है।

आज delivery हुई, दस साल के बाद किसी के पुत्र पैदा हुआ। caesarean हुआ, डॉक्टर बाहर निकली, बधाई दी, 'बहुत–बहुत बधाई हो, पुत्र पैदा हुआ है।' खुश है, बाजे बज रहे हैं, लड्डू बँट रहे हैं, इत्यादि–इत्यादि। दो दिन के बाद वही डॉक्टर सूचना देती है, 'माफ करना, बहुत कोशिश करने के बावजूद भी हम बच्चे को बचा नहीं सके।' मातम छा गया। एक सफेद कपड़े में बच्चे को लपेट देते हो, लपेट के कहते हो, 'मेहरबानी करके अपने बच्चे को जल्दी से ले जाओ, किसी और patient ने आना है।' जिस प्रकार देवी वहाँ कर्त्तव्य निभा रहे हो, वैसा ही कर्त्तव्य यदि घर में निभाओ, तो यह कर्मयोग है।

वह नौकर, यहाँ काम कर रहा है दृष्टि अपने परिवार पर है। कहीं भी काम करो, किसी भी क्षेत्र में हो, आप operation theatre में हो, patients देख रहे हो, ward round ले रहे हो इत्यादि–इत्यादि। दृष्टि भीतर से परमात्मा के साथ जुड़ी रहे, परमात्मा के साथ जुड़े रहो तो यह कर्मयोग है।

'राम राम भज कर श्री राम, करिये नित्य ही उत्तम काम।'

जो भी परमेश्वर का नाम आपको पसन्द है, remember Him constantly by that name. जो भी पसन्द है आपको। आपको शिव नाम पसन्द है बहुत अच्छी बात हैं, आपको कृष्ण नाम पसन्द है बहुत अच्छी बात है, ओम नाम पसन्द है बहुत अच्छी बात है, God नाम पसन्द है बहुत अच्छी बात है, राम–नाम पसन्द है बहुत ही अच्छी बात है। Keep Him in your remembrance constantly.

उसे याद किसलिये करना है ? वह याद दिलायेगा– परमात्मा सब कुछ तेरी इच्छा से हो रहा है, तेरी कृपा से हो रहा है, तेरी शक्ति से हो रहा है। न जाने कब तू यह शक्ति हाथ से खींच लेगा तो कड़छी चलनी बंद हो जायेगी या कलम चलनी बंद हो जायेगी ? कोई कुछ नहीं कह सकता। कभी नहीं जान सकता। तो यही मानना बुद्धिमत्ता है कि परमात्मा की कृपा से, परमात्मा की इच्छा से, उसकी कृपा से, सब कुछ होता है। मैं मात्र एक निमित्त हूँ। बड़ी मौज है, मेरी माताओ और सज्जनो निमित्त बनने में। कार चल रही है। आप चलाने वाले हो। एक बच्चा नीचे आ जाता है, मर जाता है। कार को कभी सजा नहीं मिलती। चलाने वाले को सजा मिलती है। It is so simple to understand. कार को कभी सजा नहीं मिलती। हाँलाकि कार के नीचे आके बच्चा मरा है। कार चलाने वाले को सजा मिलती है। Don't be the doer. चलाने वाला नहीं बनो, चलने वाले बनो। कर्मयोगी। बस, तो यहीं समाप्त करने की इजाजत दीजियेगा। एक घंटे का समय हो गया होगा। कोई चीज अच्छी लगी हो तो जीवन में उतारियेगा। कोई न अच्छी लगी

हो तो यहीं छोड़ जाइयेगा। पुनः आपका अपना होते हुये आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करूँगा– जीवन को बदलने की जरूरत तो है। बदलना चाहिये, ताकि कल्याण हो सके। यह तो संसारी बातें हैं। सब ठीक हैं। सब चलती हैं। प्रारब्ध के अनुसार सब कुछ होता है, यह करना है, यह आप ही को करना होगा। अतएव Do it with immediate effect. सरकारी language ऐसी है न, with immediate effect. Do it very soon without any delay.

शुभकामनायें, देवियो और सज्जनो! मंगल कामनायें। इतने व्यस्त जीवन से आपने एक घंटा निकाला है। मैं इसे कभी भूल नहीं सकूँगा। दिल्ली जा के भी चर्चा करूँगा आप सबके आगमन की, आप सब आये थे। 4 से 5 सत्संग में बैठे हुये मुझे आप सब का सत्संग प्राप्त हुआ। ये सब बातें मैं वहाँ जाकर भी करूँगा। क्यों करूँगा ? क्योंकि मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आप यहाँ सब पधारे हैं। इस वक्त न जाने कितने patients देख लेते! कितनी कमाई हो जाती! लेकिन आज की कमाई भी कम न समझियेगा। आज की कमाई का अपना ही स्थान है। देवियो और सज्जनो! आज की कमाई का कुछ अंश जरूर अपने जीवन में उतारियेगा। मेरा कोटि–कोटि प्रणाम स्वीकार कीजियेगा। बार–बार नमस्कार आप सबको। तो बनोगे कर्मयोगी ? हाथ खड़े कर रहे हो ? करो, करो, क्यों शर्माना ? करो खड़े हाथ। बिल्कुल ठीक, बहुत अच्छी बात। Please do try, Please do try. परमेश्वर! प्रार्थना है,''मेरे परमात्मा! आप हम सबकी difficulties को जानते हो। मैं भी अपने आप को आपका साथी ही बना रहा हूँ। हमारे पास समय नहीं है कि हम सबेरे उठ के तेरे सामने प्रार्थना करने के लिये बैठें, शाम को बैठें, हमारे पास सारा का सारा समय जो काम दिया हुआ है आपने, उसी के लिये है। हमारे उसी काम को परमात्मा अपनी पूजा बना देना।''

देवी! सुबह निकलो घर से तो कहो,''परमात्मा! जो कुछ भी अब से लेकर शाम तक करवाओगे, वह सब तेरी पूजा बन जाये। मेरे पास extra पूजा का समय नहीं है।'' आप कभी परमात्मा से इस प्रकार प्रेमपूर्वक प्रार्थना करके देखो, याचना करके देखो, पहले उसे अपने अंग–संग मानो कि वह मेरे भीतर विराजमान है, वह सुनने वाला है। मैं असमर्थ हूँ परमात्मा! तेरे बिना। अधूरा हूँ मैं, मेरी जिन्दगी कुछ भी नहीं है तेरे बिना, तू है तो सब कुछ है। मेरी जिन्दगी में यदि कुछ प्राप्त होगा तो तेरी कृपा से होगा, तेरे साथ होने से होगा, तू भीतर विराजमान है। तेरे होते हुये मैं अनाथ कैसे ? Question करो, तेरे होते हुये मैं अनाथ ? तू नाथों का नाथ है और मैं अपने आप को अनाथ कि मेरा कोई नहीं, यह कैसे हो सकता है ? तू है तो मैं समर्थ हूँ । उसको हर वक्त अपने साथ रखियेगा साधकजनो और अपना कर्त्तव्य निभाइयेगा। बस और कुछ करने की जरूरत नहीं है। Remember Him by any name. उसकी कला आपके हाथों द्वारा काम करती हुई दिखाई दे। अब समाप्ति पर फिर परमात्मा को प्रणाम करते हैं। अभी तक तो आपको प्रणाम कर रहा था, अब परमात्मा को प्रणाम करते हैं।

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः (7)

□□□